शुल्क 15 वर्ष
2100/– रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति 8/– रुपये
वार्षिक 250/– रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 17 : अंक 47 : नई दिल्ली : 26 फरवरी से 3 मार्च 2012

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए सायरा पधार गए हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। 7–8 मार्च को मगरतलाव में मारवाड़ संभाग की ओर से स्वागत समारोह एवं होली चातुर्मास, 4–8 अप्रेल को पाली में महावीर जयंती एवं अक्षयतृतीया हेतु 22 अप्रेल को बालोतरा पधारेंगे। बालोतरा में एक महीने का प्रवास संभावित है। पूज्यप्रवर 29 जून को चतुर्मास हेतु जसोल में प्रवेश करेंगे।

तेरापंथ के तृतीय आचार्य रायचन्दजी की महाप्रयाण भूमि रावलिया में परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा समुच्चारित गीत

भिक्षुगण अनुशास्ता रायचन्द गुरुराज !
तीसरे अधिशास्ता ! तुम पर हमको नाज ।
धन्य हुआ प्रभु ! धर्मशासन पा तुम–सा गणराज ।।

रावलिया में जन्म प्रभु का, रावलिया संन्यास ।
रावलिया में श्वास अन्तिम, सुमिरण होता आज ।।1।।

दो–दो गुरुओं से भरा था, अनुभव का भण्डार ।
प्रवचन के फरमान में तो, करते घन ओगाज ।।2।।

बक्शीशें करवा रहे हो, खुले हाथ महाराज !
चोटी तेरे हाथ में है, जीतमल्ल युवराज ! ।।3।।

रावलिया के ही लिए हम, आए सेरा प्रान्त ।
'महाश्रमण' श्रद्धाप्रणत प्रभु ! तेरापंथ समाज ।।4।।

लय : आपणै भागां री.....

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल की ओर

नश्वर शरीर से करें अमर आत्मा का कल्याण

14 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यवर आज रींछेड़ से 12 किमी. का विहार कर मजेरा पधारे। कुंभलगढ़ परिभ्रमण हेतु अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों से समागत अनेक विदेशी सैलानियों ने जैन धर्म आदि के विषय में पूज्यवर से अवगति और अध्यात्म की प्रेरणा संप्राप्त की। ऊंचे–ऊंचे पहाड़ों के बीच अवस्थित विशाल जलराशि वाला नाडेवा तालाब मनोहारी दृश्य उपस्थित कर रहा था। अपने आराध्य के एक वर्ष में दूसरी बार पदार्पण से मजेरावासी अतिशय उल्लसित थे। पूज्य आचार्यवर का प्रवास श्री फतेहलाल जीतू मेहता के निवास पर हुआ। तीन दिन पूर्व ही इसी मेहता परिवार के एक सदस्य श्री गणपतलाल मेहता का आकस्मिक देहावसान हो गया था। पूज्यप्रवर के प्रवास और संबल प्राप्ति हेतु पूरा परिवार श्रीचरणों में समुपस्थित हुआ। पूज्यवर के प्रवास से पूरे परिवार को संबल प्राप्त हुआ। आचार्यवर ने मेहता परिवार को निकट उपासना का अवसर और पावन प्रेरणा भी प्रदान की।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्रीमती पुष्पा मेहता, सुश्री दीप्ति मेहता, श्रीमती कैलाश मेहता, श्री फतेहलाल मेहता, श्री रोशनलाल मेहता एवं श्री प्रकाश बोहरा ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—'संसार में अनंत जीव हैं। उनमें से एक भी जीव न तो कम होता है और न ही वृद्धिंगत होता है। करोड़ों वर्ष पूर्व जितने जीव विद्यमान थे, आज भी उतने ही हैं और करोड़ों वर्ष के पश्चात भी उतने ही रहेंगे। मूल तत्त्व स्थायी रहते हुए भी पर्याय का परिवर्तन होता रहता है। जो जीव कभी मनुष्य होता है, वही कभी पशु, कभी देवता और कभी नारक बन सकता है। इसी प्रकार एक ही मनुष्य बचपन, यौवन और वार्धक्य को प्राप्त होता है। किन्तु जीव हमेशा जीव ही रहता है। वह कभी अजीव नहीं हो सकता और अजीव कभी जीव नहीं बन सकता। यही नियति है। जैन धर्म में इसे अनादि पारिणामिक भाव कहा जाता है। मृत्यु भी एक नियति है। जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु निश्चित है। जन्म और मृत्यु का यह क्रम अनवरत चलता रहता है। मृत्यु कब आ जाए, यह जानना प्रायः मुश्किल होता है। मैं तो काल को बहुत ईमानदार मानता हूं। वह न तो प्रलोभन में आता है और न ही भयवश किसी को छोड़ता है। इस नश्वर शरीर के द्वारा धर्माराधना कर अमर आत्मा के कल्याण का प्रयास करें।

चेतना के मौलिक गुण विकसित हों

15 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने प्रातः मजेरा से केलवाड़ा के लिए विहार किया। मार्गवर्ती केलवाड़ा पुलिस थाना के सी.आई. श्री मोहनसिंहजी कानू ने पूज्यवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। केलवाड़ा गांव में कुछ क्षण विराजमान होकर आचार्यवर ने स्थानीय लोगों को उपासना का अवसर प्रदान किया। पूज्यप्रवर आज 12 किमी. का विहार कर कांकरवा पधारे। आज का प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। यहां पदार्पण से पूर्व पूज्यप्रवर लोगों की बलवती प्रार्थना पर कांकरवा गांव के भीतर भी पधारे।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने संबोधि के बारहवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा—'आवरण, प्रतिहनन और विकार—चेतना के विकास में ये तीन बाधाएं हैं। जब चित्त आवृत होता है, तब प्राणी ज्ञान नहीं कर सकता। जैन तत्त्व विद्या के अनुसार आठ कर्मों में ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म चेतना को आवृत करने का कार्य करते हैं। अन्तराय कर्म के कारण चेतना की शक्ति प्रतिहत होती है। इस कारण वह पराक्रम नहीं कर पाती। यह कर्म चेतना को निष्क्रिय, अनुत्साही, निराश, हताश बना देता है। मोहनीय कर्म चेतना में विकार उत्पन्न करता है। इस कारण मोहग्रस्त चेतना मूढ़ बन

जाती है। जो चेतना मूढ़ होती है, वह न तो सम्यक्दर्शन को प्राप्त कर पाती है और न ही सम्यक् आचार का पालन कर पाती है। ज्ञान में बाधा डालने अथवा ज्ञान और ज्ञानी की अवमानना से ज्ञानावरणीय, किसी के कार्य में बाधा डालने से अन्तराय और कषाय के कारण मोहनीय कर्म का बंध होता है। इसलिए व्यक्ति इन कारणों से दूर रहने का प्रयत्न करे। जो चेतना आवरण, प्रतिहनन और विकार—इन तीनों पर विजय प्राप्त कर लेती है, वह अपने मौलिक गुणों को विकसित बना लेती है। प्राणी साधना के द्वारा अपने मूलभूत गुणों को विकसित करने का प्रयास करे।

संयम करें इन्द्रियों का

16 फरवरी। कांकरवा से आज कुंचोली की ओर विहार करते हुए परम पावन आचार्यप्रवर मार्गवर्ती ओडा गांव में कुंभलगढ़ तहसील के उपप्रधान श्री वरदीचन्दजी के आवास पर पधारे। उल्लेखनीय है—गत 23 अप्रेल को जब पूज्यप्रवर की यात्रा में सहगामी साधु–साध्वियों पर मधुमक्खियों का उपद्रव हुआ था, तब वरदीसिंहजी के पुत्र सोहनसिंह ने स्वयं को जोखिम में डालकर साध्वियों की रक्षा का प्रयास किया था। आज उसकी प्रार्थना पर पूज्यवर ने थोड़ा चक्कर लेकर भी उसके घर को पावन किया। पूज्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर श्री वरदीसिंहजी का परिवार हर्षविभोर था।

ओडा और कुंचोली के बीच का मार्ग रोंगटे खड़ा कर देने वाली मधुमक्खियों के आक्रमण की घटना को बार–बार स्मृति–पटल पर ला रहा था। मुनिगण और सहयात्री पूज्यवर को घटना से संबद्ध विविध स्थानों की जानकारी दे रहे थे। मार्गवर्ती कणूजा के अनेक ग्रामीणों ने पूज्यवर से पावन पाथेय प्राप्त कर नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया।

परम पावन आचार्यवर आज कांकरवा से कुल 12 किमी. का विहार कर कुंचोली पधारे। अपने छोटे से गांव में स्वल्प अंतराल के पश्चात पुनः अपने आराध्य के दर्शन कर कुंचोलीवासी धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। कुंचोली में पूज्यप्रवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने उपस्थित जनता को पूज्य आचार्यवर से संप्रेरणा प्राप्त कर महानता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—'अध्यात्म की साधना में संयम का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जहां संयम नहीं होता, वहां आध्यात्मिक साधना की आशा नहीं की जा सकती। निर्जरा तो प्रथम गुणस्थान में भी होती है, किन्तु संवर चार गुणस्थानों के पश्चात ही प्राप्य माना गया है। धार्मिक साहित्य में संयम की साधना के संदर्भ में कछुए का उदाहरण दिया जाता है। जैसे कछुआ अपने अंगों को समेट कर सुरक्षित बन जाता है, वैसे ही साधक विषयों से इन्द्रियों का संयम करें। यदि इन्द्रियों का प्रयोग आवश्यक हो तो राग–द्वेष मुक्त होकर उनका प्रयोग करें। ऐसा होता है तो साधक कल्याण की दिशा में अग्रसर हो सकता है।' पूज्य आचार्यवर ने प्रवचन के दौरान 'हाजरी' का वाचन करते हुए साधु–साध्वियों को आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, आचारनिष्ठा और मर्यादानिष्ठा––इन पांच निष्ठाओं को आत्मसात् करने और अधिकाधिक आगम स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की। हाजरी वाचन के पश्चात साध्वी चारित्रयशाजी व साध्वी कार्तिकयशाजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। पूज्यवर ने प्रवचन में प्रथम बार लेखपत्र उच्चरित करनेवाली साध्वीद्वय को अनुग्रहस्वरूप तीन–तीन कल्याणक बक्शीश किए। इस अवसर पर मुनिवृन्द ने पंक्तिबद्ध खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। कार्यक्रम में पूज्यवर ने श्रीडूंगरगढ़ में दिवंगत साध्वी राजप्रभाजी के विषय में उद्गार व्यक्त करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया।

रात्रि में आचार्यवर ने स्थानीय श्रावकों को संघीय रीति–नीति और परंपरा के संदर्भ में पावन संबोध प्रदान किया।

'श्रेष्ठ श्रुताराधक मुनि' सम्बोधन

तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित साधु–साध्वियों के सर्वांगीण विकास हेतु धर्मसंघ के आचार्य सदैव जागरूक रहते हैं। इस दृष्टि से संघ में विविध उपक्रम भी गतिमान हैं। संघीय पाठ्यक्रम के माध्यम से साधु–साध्वियों के विद्यात्मक विकास का प्रयास किया जाता है। सन् 2011 में मुनि महावीरकुमारजी, मुनि मननकुमारजी, मुनि आकाशकुमारजी, मुनि नयकुमारजी एवं साध्वी तन्मयप्रभाजी ने इस सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम को संपन्न किया। मुनि महावीरकुमारजी ने इन सात वर्षों में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। आज मध्याह्न में पूज्यवर ने साधु–साध्वियों की उपस्थिति में मुनि महावीरकुमारजी को 'श्रेष्ठ श्रुताराधक मुनि' संबोधन प्रदान किया। इस संदर्भ में पूज्यवर द्वारा प्रदत्त पत्र की भाषा इस प्रकार है––

अर्हम्

16–2–012

सन् 2005 से 2011 तक के संघीय पाठ्यक्रम में कुल मिलाकर सर्वाधिक अंक मुनि महावीरकुमार (फलसूंड) ने प्राप्त किए हैं––यह ज्ञात हुआ है।

संतों से ज्ञात हुआ, उसके अनुसार गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने फरमाया था कि सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता को विशेष उपाधि दी जाएगी। (यह बात का भाव है)

गुरुदेव महाप्रज्ञजी की मर्जी का अनुसरण करते हुए तथा स्वयं को साथ में जोड़ते हुए मैं मुनि महावीरकुमार को 'श्रेष्ठ श्रुताराधक मुनि' संबोधन प्रदान करता हूं।

कुंचोली (मेवाड़) **–आचार्य महाश्रमण**

परम पूज्यवर ने सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत इन पांच साधु–साध्वियों पर किए गए मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी के श्रम को प्रशस्य बताया।

17 फरवरी। परम पावन आचार्यवर ने आज प्रातः कुंचोली से करदा के लिए विहार किया। मध्यवर्ती गुंदोली गांव में पूज्यवर का पदार्पण हुआ। यहां के पांच मूर्तिपूजक जैन परिवारों के घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। पूज्यवर ने लोगों को पावन संबोध भी प्रदान किया।

आचार्यवर इन दिनों पुनः मेवाड़ के पहाड़ी भू–भाग पर यात्रायित हैं। आज का विहार मार्ग भी ऊंचे और हरे–भरे पहाड़ों से घिरा हुआ था। दर्रों के बीच होने वाली खेती मार्ग को रमणीयता प्रदान कर रही थी। ईख की कटाई, बैलों द्वारा चालित चर्खी से निकलता हुआ इक्षुरस और उससे बनाया जाने वाला गुड़ राहगीरों के ध्यानाकर्षण का विषय बना हुआ था। ग्रामीण लोग ताजे इक्षुरस के द्वारा अहिंसा यात्रा के साथ गतिमान लोगों का आतिथ्य कर रहे थे।

मार्ग में पूज्यवर ने राजसमन्द जिले से उदयपुर जिले में प्रवेश किया और इसी के साथ सेरा प्रान्त की सीमा प्रारंभ हो गई। इस अवसर पर उदयपुर जिलाप्रमुख श्रीमती मधु मेहता आदि ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यवर के पावन पदार्पण से सेरा प्रान्तवासी खुशियों से फूले नहीं समा रहे थे। उनके हृदयों में उमड़ता हुआ प्रसन्नता का सैलाब उनकी मुखाकृति पर मुखर हो रहा था। आचार्यवर उतार–चढ़ाववयुक्त घुमावदार मार्ग से कुल 12.01 किमी. का विहार कर करदा पधारे। पूज्यवर के पदरज के स्पर्श से अपने गांव को पावन बना देखकर करदावासी अत्यन्त पुलकित और प्रफुल्लित थे। करदा में पूज्यवर का प्रवास महावीर भवन में हुआ।

सेराप्रान्तीय स्वागत समारोह

प्रातःकालीन कार्यक्रम सेरा प्रान्तीय स्वागत समारोह के रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में

तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया, तत्पश्चात श्री जीतमल मेहता एवं कांतिलाल मेहता ने गीत के माध्यम से अपने भावों को प्रस्तुति दी। तेरापंथ श्रावक समाज सेरा प्रान्त के अध्यक्ष श्री ख्यालीलाल सिसोदिया, मंत्री श्री फूलचन्द छत्रावत, श्री देवीलाल ढालावत एवं प्राचार्य श्री पवनकुमार रावल ने पूज्यवर के स्वागत में अपने आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

उदयपुर जिला प्रमुख श्रीमती मधु मेहता ने अपने अभिभाषण में कहा—'हमारा परम सौभाग्य है कि परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण का उदयपुर जिले में पुनः पदार्पण हुआ है। मैं संपूर्ण जिले की ओर से आपका सादर स्वागत करती हूं। आपका कृपापूर्ण आशीर्वाद हम सब पर बना रहे। आपका यह स्वल्प प्रवास जिले की जनता के जीवन–परिवर्तन का कारण बने।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा—'अभी बसंत ऋतु का समय है। छह ऋतुओं में इस ऋतु को स्वास्थ्य आदि की दृष्टि से अच्छा माना जाता है। इस मौसम में पूज्यप्रवर मेवाड़ में अरावली की घाटियों के बीच परिभ्रमण कर रहे हैं। आज आपका सेरा प्रान्त में प्रवेश हुआ है। आचार्यवर ऊंची–नीची और घुमावदार सड़कों पर चलते हुए यहां पधारे हैं। उन सड़कों के आसपास कहीं पानी है तो कहीं खेत। खेतों में गेहू की बालियां पक रही हैं। लंबे–लंबे ईख खड़े हैं। ठंडी हवाएं चल रही हैं। इन सारे दृश्यों को देखते हुए आज करदा में पूज्य आचार्यवर का पदार्पण हुआ है। यह बसंत ऋतु केवल इस प्रकृति में ही नहीं, आज इस पण्डाल में भी परिलक्षित हो रही है। लोगों के मन में फूल खिल रहे हैं। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ जीवनशैली का संदेश दे रहे हैं। आप लोग उसे हृदयंगम कर अपने जीवन को सफल बनाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—'आदमी की वाणी में विषतुल्यता भी देखी जा सकती है और उसमें सुधासिक्तता भी देखी जा सकती है। एक व्यक्ति की वाणी इतनी पवित्र होती है कि मानों उससे अमृत की वर्षा हो रही है और दूसरे व्यक्ति की वाणी इतनी कटु और अयथार्थ होती है कि मानों उससे विषवृष्टि हो रही है। वाणी गुणवती और दुर्गुणवती दोनों हो सकती है। बात को व्यर्थ लंबाना और सारहीन बात कहना वाणी का विष माना गया है। परिमित और सारपूर्ण भाषा का प्रयोग करने वाला वाग्मी कहलाता है। साधनासिक्त वाणी का प्रयोग महत्त्वपूर्ण होता है। केवल लच्छेदार भाषण देना कोई बड़ी बात नहीं होती। जिसमें साधना का प्रभाव हो, मैं तो उसे महत्त्वपूर्ण मानता हूं। व्यक्ति अभ्यास के द्वारा अपनी वाणी को सुधासिक्त बनाने का प्रयत्न करे।'

सेरा प्रान्त आगमन के संदर्भ में पूज्यवर ने कहा—'मेवाड़स्तरीय मंगलभावना कार्यक्रम हो जाने के बाद घाटियों को पार कर हम मेवाड़ के एक महत्त्वपूर्ण प्रदेश सेरा प्रान्त में आए हैं। मैं पृथक यात्रा के रूप में लगभग पांच वर्ष पूर्व भी करदा आया था और यहां दो दिनों का प्रवास किया था। इस बार सेरा प्रान्त की यात्रा का शुभारंभ हम करदा से कर रहे हैं। सेरा प्रान्त के श्रावकों से उनसे उनके क्षेत्र में मिलने और कुछ बताने का अवसर प्राप्त हुआ है, यह अच्छा है। सेरा प्रान्त के लोग हमारे कुछ दिनों के इस प्रवास का लाभ उठाएं।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के पश्चात् कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। कवि श्री माधव दरक ने काव्यपाठ किया। श्री राकेश ढालावत ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

करदा में तेरापंथ समाज के चौदह परिवारों सहित तीस जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात पूज्यप्रवर श्रद्धालुओं के घरों में पधारे। रात्रि में लोगों ने पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त कर विविध संकल्प स्वीकार किए।

ऋषिराय की पुण्य धरा पर

18 फरवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः करदा से रावलियां की ओर विहार किया।

मध्यवर्ती पानेर गांव में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को पूज्यवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। पूरे गांव में शांतिदूत आचार्यवर के पदार्पण से उल्लास का वातावरण था। उन्होंने पूज्यवर के स्वागत एवं आतिथ्य हेतु अल्पाहार की व्यवस्था भी कर रखी थी, किन्तु एषणा समिति की दृष्टि से पूज्यवर ने वहां गोचरी नहीं की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर कुल 13.06 किमी. का विहार कर तेरापंथ के तृतीय आचार्य रायचन्दजी की निर्वाण भूमि रावलियाखुर्द पधारे। पूज्य आचार्यवर के समागमन से ग्रामवासी अतिशय प्रफुल्लित, पुलकित और प्रमुदित थे। लोगों में श्रद्धा–भक्ति का ज्वार उमड़ रहा था। रावलिया खुर्द में आचार्यवर का प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय कन्यामंडल एवं महिला मंडल ने पूज्यवर के स्वागत में गीत का संगान किया। श्री मीठालाल सिंघवी ने अपने आस्थासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—'आज हम लोग ऋषिराय महाराज की भूमि पर आए हैं। मुझे सात्विक संतोष है कि मेवाड़ की यात्रा में ऋषिराय की भूमि पर आ सका। रावलियाखुर्द को छोटी रावलिया भी कहा जाता है। यह परमपूज्य गुरुदेव ऋषिराय की महाप्रयाण भूमि है। कुछ वर्षों पूर्व यहां परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साथ यहां आया था। संयोग से उन्हीं दिनों मेरा जन्मदिन भी आ गया था। गुरुदेव ने आशीर्वाद की भाषा में मेरे लिए अनेक बातें फरमाईं थी, उनमें एक का भाव था कि तुम्हें ऋषिराय बनना है। मैंने एक दिन गुरुदेव से पूछा कि ऋषिराय में ऐसी क्या विशेषता थी, जिस पर मैं ध्यान दे सकूं। तब गुरुदेव ने फरमाया—'जयाचार्य में जैसे ज्ञान की विशेषता थी, वैसे ही ऋषिराय में आचार की विशेषता थी। आचार की दृष्टि से वे आगे बढ़े हुए थे, हम इतिहास में पढ़ते हैं और प्रसिद्ध भी है कि ऋषिरायजी महाराज को ब्रह्मचारी भी कहा जाता था। वे सौभाग्यशाली थे कि उन्हें आचार्य भिक्षु और आचार्य भारमलजी के साथ में रहने का अवसर मिला। वे तेरापंथ को तीसरे आचार्य के रूप में संप्राप्त हुए। आज मैं रावलिया आकर उस महापुरुष का अत्यन्त श्रद्धा और सम्मान के साथ स्मरण करता हूं।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन के दौरान ऋषिराय की स्मृति में स्वरचित गीत का संगान किया। वह गीत इसी विज्ञप्ति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित है।

रावलियाखुर्द में सत्ताईस तेरापंथी परिवार हैं। मध्याह्न और रात्रि में सभी श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर आचार्यवर ने लोगों को पावन संबोध प्रदान किया और श्रद्धालुओं ने आचार्यवर से विविध संकल्प स्वीकार किए।

आज सायंकालीन आहार के पश्चात पूज्यप्रवर ऋषिराय महाराज के समाधिस्थल परिसर में पधारे। आज रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। रात्रि में धम्मजागरणा का उपक्रम रहा। पूज्यवर ने स्वरचित गीत का पुनः संगान किया। संगायक नीलेश बाफना आदि ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

महान संतों की भूमि में भव्य स्वागत

19 फरवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर आज विहार से पूर्व ऋषिराय महाराज के समाधिस्थल पर पधारे और वहां कुछ क्षण तक ध्यान किया। उसके पश्चात पूज्यवर रावलियाखुर्द गांव के भीतर पधारे और सभी श्रद्धालुओं के घरों को अपने चरणस्पर्श से पावन किया। इस दौरान आचार्यवर ऋषिराय महाप्रयाण स्थल श्री लक्ष्मीलाल बाबूलाल बोराणा परिवार के निवास पर पधारे और कुछ क्षण तक वहां विराजे।

गृह स्पर्श के उपरान्त आचार्यवर रावलियाखुर्द से गोगुन्दा की ओर प्रस्थित हुए। मध्यवर्ती सेमटाल गांव के ग्रामीणों ने आचार्यवर से पावन प्रेरणा संप्राप्त की। कुल 9.03 किमी. का विहार कर आचार्यवर मंत्री मुनि मगनलालजी, घोर तपस्वी मुनि सुखलालजी जैसे महान संतों की भूमि गोगुन्दा पधारे। आचार्यवर के स्वागत में यहां जन सैलाब उमड़ पड़ा। सबके दिलों में लहराता हुआ श्रद्धा और भक्ति का दरिया एक अलौकिक वातावरण की सृष्टि कर रहा था। मुस्लिम, चौधरी आदि विभिन्न समाज के लोगों ने जुलूस मार्ग में पंक्तिबद्ध

खड़े होकर पूज्यवर का सादर अभिवादन किया। बुलंद जयघोष युवकों के उत्साह को अभिव्यक्ति दे रहे थे। भव्य स्वागत जुलूस मगन ज्ञान मन्दिर में पहुंचकर विशाल सभा के रूप में परिणत हो गया। पूज्यवर का आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री चतरसिंह फतावत, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती राजकुमारी खोखावत, स्वागताध्यक्ष श्री रोशनलाल इन्द्रावत, तेयुप के अध्यक्ष श्री कमलेश कोठारी, श्री राजकुमार फतावत आदि ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। अमेरिका से समागत श्री कीर्ति जैन ने अपनी मातृभूमि में पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। स्थानीय सरपंच श्री करणसिंह झाला ने जैन धर्म के अवदानों पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त करते हुए संपूर्ण गांव की ओर से आचार्यवर का अभिनंदन किया। तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालालजी मालू ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के तेरहवें अध्याय पर आधारित अपने पावन प्रवचन में परमात्म स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा—'आत्मा की परम अवस्था का नाम ही परमात्मा है। उसका स्वरूप है—वह शरीर और राग–द्वेष से सर्वथा मुक्त है। परमात्मा बनने के लिए राग–द्वेष से मुक्ति की साधना आवश्यक होती है। साधु–साध्वियां राग–द्वेष विमुक्ति की साधना का पथ स्वीकार करते हैं। उनके श्वेत वस्त्र इस बात के प्रतीक कहे जा सकते हैं कि जैसे ये वस्त्र उजले हैं, वैसे ही अपने मन और आत्मा को भी उजला बनाना है। यदि राग–द्वेष प्रतनु बन जाते हैं तो अहिंसा, सत्य आदि स्वतः सध जाते हैं। पहले सदात्मा और महात्मा बनें तो कभी परमात्मा भी बना जा सकता है।'

पूज्यवर ने स्वर्गतुल्य और नरकतुल्य परिवार का उल्लेख करते हुए कहा—'जिस परिवार में संप (मैत्री) सुसंस्कार और संपत्ति होती है, वह परिवार स्वर्गतुल्य होता है। जिस परिवार में कलह होता है, संस्कारों और प्राथमिक आवश्यकताओं की संपूर्ति का अभाव होता है, वह परिवार नरकतुल्य बन जाता है। परस्पर भावात्मक मैत्री और सुसंस्कारों का रहना महत्त्वपूर्ण बात होती है। इन दोनों के द्वारा पारिवारिक वातावरण को स्वस्थ बनाया जा सकता है।'

गोगुन्दा आगमन के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा—'आज हम गोगुन्दा आए हैं। यहां आकर मैं श्रद्धेय मंत्रीमुनि मगनलालजी स्वामी को बड़े सम्मान के साथ याद कर रहा हूं। तेरापंथ शासन को उनके रूप में गोगुन्दा का महान अवदान मिला। इस धरती ने तेरापंथ को एक रत्न समर्पित किया। वे तेरापंथ के प्रथम संत थे, जो मंत्री पद पर आसीन हुए। गुरुदेव तुलसी को मैं प्रथम आचार्य मानूं, जिन्होंने किसी मुनि को विधिवत मंत्री मुनि के रूप में स्वीकार किया था। दूसरा नम्बर आप मेरा मान लो। पहला नम्बर गुरुदेव तुलसी का तो दूसरा नम्बर मेरा है। मैंने भी मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) को विधिवत राजलदेसर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मंत्री मुनि के रूप में स्वीकार किया था। मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी यहां नहीं पधारे। हम उन्हें साथ में नहीं लाए। अच्छा होता मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी के क्षेत्र में मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी साथ में होते। हमने सोचा उन्हें यात्रा में कोई कष्ट न हो। साधन की यात्रा में साधन चालकों को भी कष्ट न पड़े, इसलिए मैंने कहा कि आप चारभुजा में विराज जाओ। बाद में मगरतलाव में हमारा मिलन हो सकेगा। मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी ने पंचमाचार्य मघवागणी से दशमाचार्य गुरुदेव तुलसी तक पांच–पांच आचार्यों की सेवा की। उनमें अद्‌भुत प्रतिभा, चिंतन और विजन था। आचार्यों की दूसरी देह के रूप में उन्हें देखा जा सकता है। उनके लिए शासन मुख्य और व्यक्ति गौण था। मेरे मन में उनके प्रति सम्मान की भावना है। ऐसे महान संत की भूमि पर आकर मुझे सात्विक प्रसन्नता हो रही है। यहां आकर मैं घोर तपस्वी मुनि सुखलालजी स्वामी का भी सम्मान के साथ स्मरण कर रहा हूं। वे महान तपस्वी और सेवाभावी संत थे। उन्होंने कितनी

साधना की, कितना तप तपा। ऐसे तपस्वीरत्न की भूमि पर हम आए हैं। यहां आकर परमपूज्य जयाचार्य के मित्र मुनि सतीदासजी स्वामी की भी स्मृति कर रहा हूं। जयाचार्य ने उन्हें कितना सम्मान दिया, उन्हें अपने साथ पट्ट पर बिठाया। यह तेरापंथ शासन की विरल घटना है।'

पूज्यवर ने इस प्रसंग में आगे कहा—'यहां के शासनश्री मुनि रवीन्द्रकुमारजी को मैंने एक जागरूक मुनि के रूप में देखा। वे स्वाध्यायशील, सौम्यस्वभावी और विशिष्ट संयम साधना करनेवाले मुनि प्रतीत हुए। राजलदेसर में मैंने उन्हें शासनश्री के रूप में स्वीकार किया। उन्हें हमने मेवाड़ की ओर आने के लिए कहा है। वे गोगुन्दा में चतुर्मास करें। (पूज्यवर से गोगुन्दा चतुर्मास की घोषणा सुनकर गोगुन्दावासियों ने 'ऊं अर्हम' की तुमुल ध्वनि की)

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा—'साध्वी राजकुमारीजी गोगुन्दा की वयोवृद्ध साध्वी हैं। वे अभी साध्वी पानकुमारीजी 'प्रथम' के साथ उदासर में हैं। वे भी खूब अच्छी साधना करें।'

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात् तेरापंथ सभा के मंत्री श्री नेमीचन्द सुराणा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जनप्रतिनिधि सम्मेलन का समायोजन

आज मध्याह्न में श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में 'राजनीति में अणुव्रत' विषय पर जनप्रतिनिधि सम्मेलन का समायोजन हुआ। कार्यक्रम में उदयपुर जिलाप्रमुख मधु मेहता एवं देहात जिला अध्यक्ष श्री लालसिंह झाला ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया ने अपने वक्तव्य में कहा—'अणुव्रत हर जाति और वर्ग के लिए आवश्यक है। राजनीति के क्षेत्र में कार्य करनेवालों के लिए इसकी विशेष रूप से आवश्यकता है। नेताओं से इसका पालन करवाने के लिए जनता को जागरूक बनना होगा। इसके लिए वह भय और प्रलोभन से मुक्त रहकर ईमानदारी से अपना मत दे, यह अपेक्षित है। मैं पूज्य आचार्यश्री से यही आशीर्वाद चाहता हूं कि आज के इस अनैतिकता के माहौल में मेरा जीवन उज्ज्वल बना रहे और मैं भ्रष्टाचार से अन्तिम सांस तक लड़ता रहूं।'

राजस्थान के खेल एवं युवा राज्यमंत्री श्री मांगीलाल गरासिया ने अपने वक्तव्य में कहा—'गोगुन्दा की इस धरती पर पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का आचार्य बनने के बाद प्रथम बार पदार्पण हुआ है। यह हमारे लिए अत्यन्त गौरव की बात है। आपकी अहिंसा यात्रा ने मेवाड़ के जनजीवन को निर्मल बनाया है। राजनीति में यदि कोई अणुव्रत को धारण कर कार्य करता है तो जनता उसका मूल्यांकन भी करती है। आचार्यश्री के मार्गदर्शन से जनप्रतिनिधियों को नई दिशा मिलेगी।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने जनप्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा—'राजनीति में अणुव्रत' विषय पर जनप्रतिनिधि सम्मेलन समायोजित हुआ है। राजनीतिक व्यक्तियों और जनता के लिए यह ध्यातव्य है कि मत जाति, संप्रदाय, क्षेत्र आदि पर आधारित नहीं, मूल्याधारित होना चाहिए। वोट का आधार शराब और पैसा भी न हो। मतदाता और उम्मीदवार दोनों का यह संकल्प हो कि ऐसा वोट न तो देंगे, न लेंगे। लोकतंत्र में कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासननिष्ठा जागृत रहे, इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। भ्रष्टाचारमुक्त और प्रामाणिकतायुक्त लोकतंत्र का निर्माण हो तो राजनीति में अणुव्रत स्वतः अवतरित हो सकेगा।'

कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथी सभा द्वारा गोगुन्दा निवासी अमेरिका प्रवासी श्री कीर्ति जैन को सम्मानित किया गया। अध्यक्ष श्री चतरसिंह फत्तावत द्वारा अभिनंदन पत्र के वाचन के उपरान्त स्मृतिचिह्न, अभिनंदन पत्र आदि श्री कीर्ति जैन को प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्री कीर्ति जैन ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। स्थानीय सरपंच श्री करणसिंह झाला ने संपूर्ण गांव की ओर से पूज्यवर के करकमलों में अभिनंदन पत्र

समर्पित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजकुमार फत्तावत ने किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात सौ से अधिक घरों का स्पर्श किया। इस दौरान मंत्री मुनि मगनलालजी की जन्मस्थली में भी पूज्यवर का पावन पदार्पण हुआ। श्री नाथूलाल भोलावत परिवार ने आचार्यवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। रात्रि में स्थानीय श्रद्धालु परिवारों ने पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त कर विविध संकल्प स्वीकार किए। गोगुन्दा के थानेदार श्री हणवंतसिंह ने आचार्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

20 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने गोगुन्दा से विहार के पूर्व तेरापंथ समाज द्वारा संचालित सुख बाल मंदिर उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे और साठ से अधिक घरों का स्पर्श किया। पूज्यवर आज मंत्रीमुनि मगनलालजी की जन्मस्थली में पुनः पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान हुए। सरपंच श्री करणसिंह झाला का घर भी पूज्यवर की पदरज से पावन हुआ। गोगुन्दा से दो किमी. दूर स्थित 'गुरु पुष्कर पावन तीर्थ' नामक संस्थान में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। संस्थान के अध्यक्ष श्री ललित ओरड़िया, मंत्री श्री सुखलाल मादरेचा आदि कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर का सादर स्वागत किया। सभागार में आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में पूज्यवर ने जनता को पावन प्रेरणा प्रदान की।

ऋषिराय की जन्मस्थली रावलियाकलां में पावन पदार्पण

एकादशमाधिशास्ता परमपूज्य आचार्यप्रवर आज 7.03 किमी. का विहार कर तेरापंथ के तृतीय अधिशास्ता ऋषिराय की जन्मस्थली रावलियाकलां में पधारे। अपने आराध्य को लगभग पांच वर्ष बाद अपने गांव में पाकर रावलियाकलांवासी आह्लाद और धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। गांव में सर्वत्र उत्सव का–सा माहौल था। यहां पूज्यवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ। उल्लेखनीय है—यह वही रावला (वर्तमान में तेरापंथ भवन) है, जहां आचार्य भिक्षु के समय दीक्षा के लिए उद्यत श्राविका रूपांजी के पैरों में खोड़ा बांधा गया था। वह खोड़ा चामत्कारिक रूप से टूट गया, तब परिजनों ने उन्हें दीक्षा की अनुमति दी।

अणुव्रत वाटिका परिसर में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, कन्यामंडल और ऋषिराय मित्र मंच ने आचार्यवर के स्वागत में गीत का संगान किया। स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री रोशनलाल बम्ब, श्री हिम्मत राठौड़, श्री भगवतीलाल राठौड़, कन्यामंडल की संयोजिका सुश्री वनिता बम्ब, श्रीमती रीना राठौड़, श्री रवि जैन, श्री रतन बम्ब आदि ने अपनी भावाभिव्यक्तियां दीं। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों और बालक वंश राठौड़ ने बालस्वरों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा—'तेरापंथ के तृतीय आचार्य जन्म के समय से ही मानो महानता अपने साथ लेकर आए थे। अनेक उदाहरणों से यह कहा जा सकता है कि बाल्यावस्था से ही वे सूझबूझ, साहस और विलक्षणता के धनी थे। रावलिया की इस धरती पर जन्म लेने वाले उस महापुरुष ने तेरापंथ को बहुत विस्तार दिया। थली क्षेत्र उस महापुरुष की ही देन है। यहां के लोग उनके इतिहास से प्रेरणा लेकर एक नया इतिहास रचने की तैयारी करें।'

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में सिद्धावस्था का उल्लेख करते हुए जनता को समता की साधना हेतु उत्प्रेरित किया। आचार्य ऋषिराय की जन्मभूमि में अपने आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा—'परमपूज्य आचार्य रायचन्दजी ने बहुत छोटी अवस्था में वीतरागता का पथ स्वीकार किया था। महामना आचार्य भिक्षु का पावन साया उन्हें संप्राप्त हुआ। आचार्य भिक्षु ने उनमें विलक्षणता देखी, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। तेरापंथ का सौभाग्य था कि ऋषिराय महाराज जैसे युवा मुनि उसे आचार्य के रूप में प्राप्त हुए। उन्होंने लंबे काल तक तेरापंथ शासन की सेवा की। उनमें साधना का तेज था। कहा जाता है कि जब वे मध्याह्न में विहार करते, बहुधा आकाश मेघाच्छन्न हो जाता। आज हम उनकी जन्मभूमि पर आए हैं। मैं सेरा प्रान्त

मूख्यतया रावलिया के लिए ही आया हूं। मुझे आध्यात्मिक और सात्विक संतोष है कि हमारे तीसरे सिरमौर अधिशास्ता आचार्य रायचन्द महाराज की जन्मभूमि, दीक्षा भूमि और समाधिभूमि पर मैं आ सका।' पूज्यवर ने इस अवसर पर ऋषिराय की स्तुति में स्वरचित गीत का संगान भी किया।

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार समर्पण समारोह

आज मध्याह्न में परमाराध्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में जैन विश्वभारती द्वारा चंडीगढ़ के श्री जयनारायण शर्मा को 'आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार–2010' प्रदान किया गया। श्री सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित यह पुरस्कार परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य पर विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को दिया जाता है।

कार्यक्रम में जैन विश्वभारती के उपमंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया ने पुरस्कार के बारे में अवगति देते हुए श्री शर्मा का परिचय प्रस्तुत किया। प्रो. बच्छराज दूगड़ ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। श्रीमती शांति सुराणा ने प्रशस्तिपत्र और विजयसिंह चोरड़िया एवं निर्मल सुराणा ने प्रतीकचिह्न व पुरस्कार राशि एक लाख का चैक श्री शर्मा को प्रदान किया। श्री जयनारायण शर्मा ने अपने स्वीकृति भाषण में इस पुरस्कार को आचार्य महाप्रज्ञजी की अनुकंपा और आशीर्वाद का प्रतिफल बताया। उन्होंने 'नॉन वोइलेंट इकोनोमी' कृति पूज्यवर को उपहृत की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा—'व्यक्ति के जीवन में अर्थ और भौतिक संसाधनों का मूल्य होता है, किन्तु विद्या का विशिष्ट मूल्य होता है। जो उसकी आराधना करते हैं, वे सरस्वती की साधना करते हैं। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के जीवन का कितना समय श्रुताराधना में बीता। उन्होंने अपने ज्ञानबल के आधार पर विपुल साहित्य का सृजन किया। उस महामनीषी के नाम से जुड़ा यह सम्मान श्री जयनारायण शर्मा को दिया गया। जैन विश्वभारती द्वारा सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से दिया जाने वाला यह पुरस्कार विद्याप्रेमी लोगों के प्रोत्साहन का प्रयास है। शर्माजी का विद्या के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। गांधीवाद, अहिंसा, शांति आदि क्षेत्रों में इनका विकास है। शर्माजी अपने विद्यारसिकत्व के द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाते रहें और उसे दूसरों में भी बांटते रहें।' कार्यक्रम का संचालन सुश्री वंदना कुंडलिया ने किया।

रावलियाकलां में अस्सी तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् पूज्यवर ने उनके घरों का स्पर्श किया। इस क्रम में आचार्यवर ऋषिराय जन्मस्थल में भी पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान होकर ध्यान किया। पूज्यवर ने यहां एक पद्य की रचना की, जो इस प्रकार है—

जन्मस्थल ऋषिराय का, कुटिया का-सा रूप।
ध्यान किया ऋषिराय का, महाश्रमण गण भूप ।।

रात्रि में पारिवारिक सेवा के दौरान श्रावकों को पूज्यवर से प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने परिवार से कोई दीक्षार्थी तैयार होने पर उसे 'ना' कहने का परित्याग किया।

देखे चारों स्थान

परमपूज्यप्रवर ने रावलियाकलां से प्रस्थान करने से पूर्व अवशिष्ट श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया तथा ऋषिराय जन्मस्थल पर पुनः पधारे। आचार्यवर बड़ी रावलिया से नान्देशमा की ओर गतिमान थे। एक स्थान पर लोगों ने पूज्यवर से निवेदन किया कि ऋषिराय महाराज की दीक्षा यहीं हुई थी। पूज्यवर ने वहां खड़े होकर गीत का आंशिक संगान किया। उसके बाद ऋषिराय के समाधिस्थल पर पधारे और वहां कुछ क्षण जप किया। यहां आचार्यप्रवर ने सीढ़ियों के परिपार्श्व में विराजमान होकर एक और पद्य फरमाया। वह पद्य इस प्रकार है—

स्मारक यह ऋषिराय का, पुनरपि आए आज।
जाप किया ऋषिराय का, सिद्ध हुवो सब काज।।

आचार्यवर समाधिस्थल से रावलियाखुर्द गांव में पधारे और ऋषिराय महाप्रयाणस्थली पर विराजमान होकर गीत का संगान किया। यहां भी आचार्यवर ने एक पद्य की रचना की, वह इस प्रकार है—

रायचन्द गुरुदेव के, देखे चारों स्थान।
एक दिवस में 'महाश्रमण', अब आगे प्रस्थान।।

पद्य का अन्तिम चरण फरमाते हुए पूज्यवर ने पुनः गंतव्य की ओर प्रस्थान कर दिया। रावलिया से नान्देशमा के मार्ग में अनेक ग्रामीण इक्षुरस के द्वारा राहगीरों के आतिथ्य का अवसर प्राप्त कर रहे थे। पूज्यवर ने कुछ क्षण रुक कर बैल चालित रहट का अवलोकन किया।

आचार्यवर नौ किमी. का विहार कर नान्देशमा पधारे। आचार्यवर के पावन पदार्पण से नान्देशमावासी अत्यन्त हर्षित और उल्लसित थे। भक्तिमान श्रावकों की प्रसन्नता उनकी आंखों में प्रतिबिंबित हो रही थी। यहां आचार्यवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ कन्यामंडल एवं महिलामंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। सभा के मंत्री श्री खूबीलाल चतरावत, श्री फूलचन्द चतरावत, स्थानकवासी समाज के मंत्री श्री मीठालाल सोलंकी ने अपने भावसुमन अर्पित किए। उदयपुर जिलाप्रमुख श्रीमती मधु मेहता ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक संभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में उपस्थित जनमेदिनी को समभाव, इन्द्रिय संयम, ज्ञान और तपस्या के विकास की प्रेरणा दी। पूज्यवर के प्रवचन के पश्चात श्री प्रकाश सिंघवी ने आभार ज्ञापित किया। नोखा से समागत श्री ईश्वरचन्द बैद ने साध्वी रतनश्रीजी 'लाडनूं' की प्रेरणा से भरे गए 113 बारहव्रती श्रावकों के संकल्प पत्र पूज्यवर को उपहृत किए।

आज मध्याह्न में दिल्ली से समागत श्री सुशील जैन ने अपने दाम्पत्य जीवन के पच्चीस वर्षों की संपन्नता पर पूज्यवर के दर्शन किए। उपासना के दौरान आचार्यवर ने अनुग्रह करवाते हुए उनके लिए एक पद्य फरमाया, जो इस प्रकार है—

धर्मनिष्ठ गुरुभक्तियुत, श्रावक सुशील जैन।
आत्मज लक्खीराम का, दिल्ली का गुडमैन।।

नान्देशमा में पचास तेरापंथी परिवारों सहित शताधिक जैन परिवार हैं। पूज्यप्रवर सायंकालीन आहार के पश्चात् प्रायः सभी जैन घरों में पधारे। दूसरे दिन विहार से पूर्व अवशिष्ट घर पूज्यवर के चरणस्पर्श से पावन बने। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी जनता को पूज्यवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ।

साध्वी राजप्रभाजी कालधर्म को संप्राप्त

साध्वी राजप्रभाजी (फारबिसगंज) का गत 7 फरवरी को श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा—'साध्वी राजप्रभाजी बीकानेर निवासी फारबिसगंज प्रवासी सेठिया परिवार से संबद्ध थीं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की अनुज्ञा से साध्वी गोरांजी ने नोगांव (असम) में उन्हें दीक्षित किया। यात्रा की संपन्नता के पश्चात साध्वी गोरांजी ने उन्हें गुरुचरणों में समर्पित किया। उसके उपरान्त वे साध्वी कमलूजी (उज्जैन) के साथ वर्षों तक रहीं। कुछ वर्षों तक उन्हें गुरुकुलवास में भी रखा गया। उन्होंने अग्रगण्य के रूप में दो पृथक् चतुर्मास किए। विगत एक वर्ष से वे श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

में स्थिरवासिनी थीं। जप, स्वाध्याय आदि में उनकी अच्छी रुचि थी। वि.सं.2068, माघ शुक्ला पूर्णिमा को सायंकालीन आहार के पश्चात् अकस्मात् श्वास का वेग बढ़ा। संभवतः हृदयाघात भी हुआ होगा और वे कालधर्म को संप्राप्त हो गईं। श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी अणिमाश्रीजी और साध्वी मंगलप्रज्ञा आदि साध्वियों का उनकी चित्तसमाधि में अच्छा सहकार रहा।

अनशन स्वीकार किया

श्रीडूंगरगढ़ में स्थिरवास कर रही साध्वी राजवतीजी (श्रीडूंगरगढ़) ने 20 फरवरी 2012, तदनुसार फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी को छह दिन की संलेखना में तिविहार अनशन स्वीकार किया है। परिणामधारा प्रवर्द्धमान है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

5100/– श्रीमती केसरदेवी दूगड़ (धर्मपत्नी–स्व. श्री सूरजमलजी दूगड़ जौहरी, सरदारशहर) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू रतनलाल–अमराव, सुपौत्र व पौत्रवधू संजीव–संगीता, आशीष–अल्पना, प्रपौत्र अमन व प्रपौत्री साक्षी, सृष्टि, आंचल दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

2100/– स्व. श्रीमती शान्तादेवी सेठिया (धर्मपत्नी–श्री शान्तिलालजी सेठिया, जालना) की प्रथम पुण्यतिथि (1 मार्च) पर उनकी सुपुत्री श्रीमती सुनीता–अरुणजी खटेड़, दौहित्र व दौहित्री रौनक, प्रियंका खटेड़, बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त।

2100/– चि. प्रमोदकुमार (सुपुत्र–श्री नेमीचन्द चोपड़ा) सह सौ. मीनाक्षी (पूजा) के जैन संस्कार विधि से संपन्न विवाह के उपलक्ष्य में श्री माणकचन्द नेमीचन्द, सोहनराज, कमलेश, प्रवीण, विरल, गणधर चोपड़ा, कनाना–उंझा–अहमदाबाद द्वारा प्रदत्त।

2100/– श्री पुखराजजी दक (भीम–मुम्बई) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू राकेश–सुनीता, सुपौत्र हर्ष, खुशी व गीत दक द्वारा प्रदत्त।

2100/– स्व. श्रीमती मदनदेवी बरड़िया (धर्मपत्नी–श्री रूपचन्दजी बरड़िया, आडसर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू बिमल–उर्मिला, विनोद–सुमन, मनोज–सुमन, सुपौत्र ऋषभ, सिद्धार्थ, जय, दर्शन, आदित्य, सुपौत्री रिया, भावी बरड़िया, अररियाकोर्ट (बिहार) द्वारा प्रदत्त।

दीक्षा का आदेश

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने समदड़ी प्रवास के दौरान 13 मई 2012 को मुमुक्षु हेमलता (समदड़ी) को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा–श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान
पो.सिरियारी–306027, जि.पाली (राजस्थान) फोन : 09680055381, 09352404641
दिल्ली कार्यालय का फोन 011–23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
प्रकाशन दिनांक : 25–2–2012

आदर्श साहित्य संघ, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002 के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032 से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**